मैं आजकल बहुत से गुरू, पीर, महाराजाओं मे धर्म के प्रतिकट्टरता व तंगदिली देखता हूं। और उनके शिष्यों को यह आदेश होता है कि वे किसी दूसरे महापुरूष के सत्संग में न जाएं। मैं चाहता हूं। कि ये महापुरूष इस २१वी सदी में उेसे अंधेरी में न रहकर उदारचित बनें। मेरे पास सत्संग में लगभग सभी पम्प्रदायों के शिष्य आते हैं। मेरा सत्संग मानवता का है। आप गुरू. पीरों को भी इस सम्प्रदाय के विचारों मे बन्धे हुए हैं जो बहुत पुरानी बात हो गई उस समय जब महापुरूषें ने यह ज्ञान जिस भाव से दिया था. ठीक था। परन्तु समय के साथ सब कुछ बदलता रहता है। जैसे कहा है—

जमीं बदलती है. आसमां बदलता है। मकीं मकां जो बदले. समां बदलता है। नहीं है एक बतिरे पर यह जहां कायम। सभी बदलते हैं जब पूरा जमा बदलता है।

आज का मनुष्य बुध्दिमान है और वह यह समझता है कि परमात्मा दो—चार नहीं हैं। दसके नाम चाहे जितने बोले जाए परन्तु जो शक्ति यह संसार चला रही है. वह एक है और मनुष्य भी सब एक ही जैसे तत्व से बने हुए हैं और सभी सुख चाहते हैं. ज्ञान चाहते है तथा जीना चीते हैं। फिर यह लडना—झगडा केवल अज्ञानता और नासमझी की बात है। अत: पहले आप यह खुद समझ कर कि मनुष्य क्या है? कहां से आया है? और कहां जायगा? तथा इस समय उसे क्या शुभ कर्म करने चाहिए? फिर यह बात अपने शिष्यों को बताएं। क्योंकि आश्रम गद्दी और शिष्य आपके साथ जाने वाले नहीं है। आपके ही शुभ—अशुभ कर्म अपके साथ जाने हैं।

मैं आपको एक बहुत बडे पूज्य महात्मा के अन्त समय की बात बताता हूं। उसने ज्ञान—ध्यान के मीठे सत्संग देकर बहुत बडा आश्रम बनाया और अपने लाखों शिष्य बना लिए परन्तु खुद योग—साध्ना का अभ्यास किया नहीं जो उसे करना चाहिए था। जब उनका अन्तिम समय आया तब वह बीमार हो गए और दो वर्ष तक बहुत बीमार रहे। जब वह महात्मा तकलीफ के कारण हाय—हाय करने लगे तब उनके सेवक ने कहा कि महाराज जी आप ध्यान—समाधि लगाकर मन के मण्डल से ऊपर चले जाओ तब महात्मा जी ने कहा कि भाई जो काम करना था. वह नहीं किया। पूरा समय शिष्य बनाने. उनको नाम देने तथा आश्रम बनाने मे ही व्यतीत कर दिया। यह उनका अन्तिम समय का अफसोस था। अत: सभी महात्माओं को पहले इपना काम बनाना चाहिए. बाद में दूसरा काम करना चाहिए क्योकि अपने कल्याण मे ही जग का कल्याण है और समय किसी की प्रतीक्षा नहीं करता वह तो प्रतिदिन निकट आ रहा है। जैसेकहा है—